अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्य-भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वरः।।८।।
निह त्राता निह त्राता निह त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति।।९।।
जिने भिक्तिर्जिने भिक्तिर्जिने भिक्तिर्दिने दिने।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे।।१०।।
जिनधर्मविनिर्मुक्तो मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपि दिरद्रोऽपि जिन-धर्मानुवासितः।।११।।
जन्म-जन्मकृतं पापं जन्म-कोटिमुपार्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगं हन्यते जिन-दर्शनात्।।१२।।
अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य,

देवः ! त्वदीय-चरणाम्बुजवीक्षणेन। अद्य त्रिलोकतिलकः ! प्रतिभासते मे,

## देव-स्तुति

(पं. बुधजन कृत)

(हरिगीतिका)

प्रभु पतित पावन, मैं अपावन, चरन आयो सरन जी। यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन-मरन जी।। तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी। या बुद्धिसेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।। भव विकट वन में करम वैरी, ज्ञान धन मेरो हस्यो। तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिस्यो।। धन घड़ी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो। अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो।। छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरैं। वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रविछवि को हरैं।।